आभार

कोई भी बड़ा और महत्वपूर्ण कार्य कभी भी किसी दूसरे के सहायता के बिना संपन्न नहीं हो पाता उसके प्रति हार्दिक आभार प्रकट करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।

ईश्वर इस सृष्टि का रचनाकार है। किसी भी कार्य के पूरा होने में ईश्वर की कृपा अवश्य ही होती है इसलिए सर्वप्रथम मैं ईश्वर का आभारी हूं जिनके कृपा से मैं इतना कठिन कार्य पूर्ण कर सका।

ईश्वर के पश्चात परमपूजनीय माता-पिता के चरणों में सादर प्रणाम करता हूं जिनका आशीर्वाद सदैव प्रेरणास्पद रहता है मैं मेरे माता श्रीमती राजकुमारी एवं पिता श्री राम सजीवन सिंह का आजीवन ऋणी रहूंगा जिनके आशीर्वाद, प्रेरणा एवं सहायता से मैं इस मुकाम पर पहुंच सका हूं।

सर्वप्रथम मैं अपने परम श्रद्धेय गुरुवर शोध निदेशक प्रो० दीपेंद्रसिंह पी. जाडेजा एवं प्रो० लता सुमंत जी के प्रति श्रद्धावान हूं। प्रस्तुत शोध प्रबंध आपकी प्रेरणा, प्रोत्साहन स्नेह एवं कुशल निर्देशन का परिणाम है। उन्होंने इस कार्य को लक्ष्य तक पहुंचने में अपना जो बहुमूल्य समय दिया एवं मार्गदर्शन किया उसे शब्दों में वर्णित करना मेरे अहं का सूचक होगा। आपकी स्नेहिल व्यवहार एवं ज्ञानपुंज की आभा से मेरा भविष्य भी प्रकाशमान होता रहे यही आदरणीय गुरु चरणों में मेरी आकांक्षा है।

मैं अपने हिंदी विभाग की विभाग अध्यक्ष प्रो० कल्पना गवली के प्रति आभार प्रकट करता हूं जिनके सानिध्य में मैंने अपना शोध प्रबंध पूर्ण किया।

मैं अपने हिंदी विभाग के आदरणीय पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो० दक्षा मिस्त्री जी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूं जिनका स्नेह, मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद मुझे आज तक प्राप्त होता आ रहा है।

मैं अपने विभाग के आदरणीय प्राध्यापकगण प्रो० सन्नौ पाण्डेय, डॉ० माया प्रकाश पाण्डेय, प्रो० के० वी० निनामा, डॉ० अनीता शुक्ला, डॉ० मनीषा ठक्कर, डॉ० एन० एस० परमार, डॉ० अजहर ढ़ेरीवाला आदि गुरुजनों के प्रति आभारी हूं जिनका स्नेह, सहयोग एवं आशीर्वाद मुझे सदैव प्राप्त हुआ।

मैं महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ोदरा गुजरात एवं पुस्तकालय हंसा मेहता, के प्रति हार्दिक आभार प्रकट करता हूं ।

मैं इलाहाबाद विश्वविद्यालय के प्रो० शिव प्रसाद शुक्ल जी का भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं जिन्होंने समय-समय पर मेरा उचित मार्गदर्शन किया।

मैं अपनी बड़ी बहन श्रीमती आभा सिंह एवं एवं आदरणीय जीजा श्री हरिमोहन सिंह को सादर प्रणाम करता हूं जिनका मार्गदर्शन, सहयोग और आशीर्वाद लगातार मिलता रहा है। मुझे सदा उल्लासित भाव से प्रगतिशील बनने की प्रेरणा दी मैं आपकी प्रति हृदय से आभार व्यक्त करता हूं।

मेरे परिवार जनों में मेरे बड़े भाई श्री महेश कुमार सिंह एवं छोटे भाई बृजेश

कुमार सिंह, आलोक कुमार सिंह एवं जीवन संगिनी संगीता सिंह का भी बहुत सहयोग रहा है जिनकी सहायता से मुझे यह शोध प्रबंध पूर्ण करने में कोई कठिनाई नहीं हुई, मैं उनका भी हार्दिक आभार व्यक्त करता हूं।

मैं अपने मित्रों एवं सहयोगियों में राजेश कुमार पटेल ,वीरेंद्र सिंह, ओम प्रकाश, प्रेम शंकर सिंह, नागेंद्र कुमार शर्मा, क्षेत्र सिंह, डॉ ईश्वर अहिर, सुनील यादव, डॉ विजय यादव, सागर देसले, जितेंद्र वाघेला, योगेश पटेल (बड़ोदरा), आशा साल्वे आदि जिन्होंने शोध प्रबन्ध की पूर्णता में अपना बहुमूल्य सहयोग दिया है । इस शोध प्रबंध को पूर्ण करने में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जिन लोगों ने मेरे उत्साह में बढ़ोतरी की तथा मेरी सहायता की उनके प्रति भी मैं आभार प्रकट करता हूं।

मैं उन सभी साहित्यकारों और समीक्षकों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ जिनकी कृतियों से मैंने प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप में सहायता और विचारोत्तेजना प्राप्त की हैं।

मैं अपने इस महत्वाकांक्षी शोध प्रबंध को कभी पूर्णता तक न पहुंचा पाता यदि गुरुजनों एवं परिजनों का आशीर्वाद और स्नेह का संबल कदम कदम पर मेरे साथ ना होता। निर्देशक शोध निर्देशक आदरणीय प्रो॰ दीपेंद्रसिंह पी. जाडेजा, प्रो॰ लता सुमंत एवं विभागाध्यक्ष आदरणीय प्रो॰ कल्पना गवली, का मार्गदर्शन, उत्सावर्धन व सुझाव मिला इनके आशीषो की छाया निरंतर मेरे साथ रही है जिनके कारण मैंने यह असंभव सा कार्य संभव व पूर्ण कर पाया।

यह शोध प्रबंध भविष्य में अनुसंधित्सुओं के लिए काम आ सके, इसी उम्मीद के साथ मैं अपने शब्दों को विराम देता हूं।

शोध-छात्र

प्रमोद कुमार सिंह

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,

बडौदा, गुजरात